कोलकाता केंद्र पर कृष्णा सोबती की याद में शोक सभा

हिंदी की सुप्रसिद्ध लेखिका कृष्णा सोबती के दुखद निधन पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी

शोक सभा

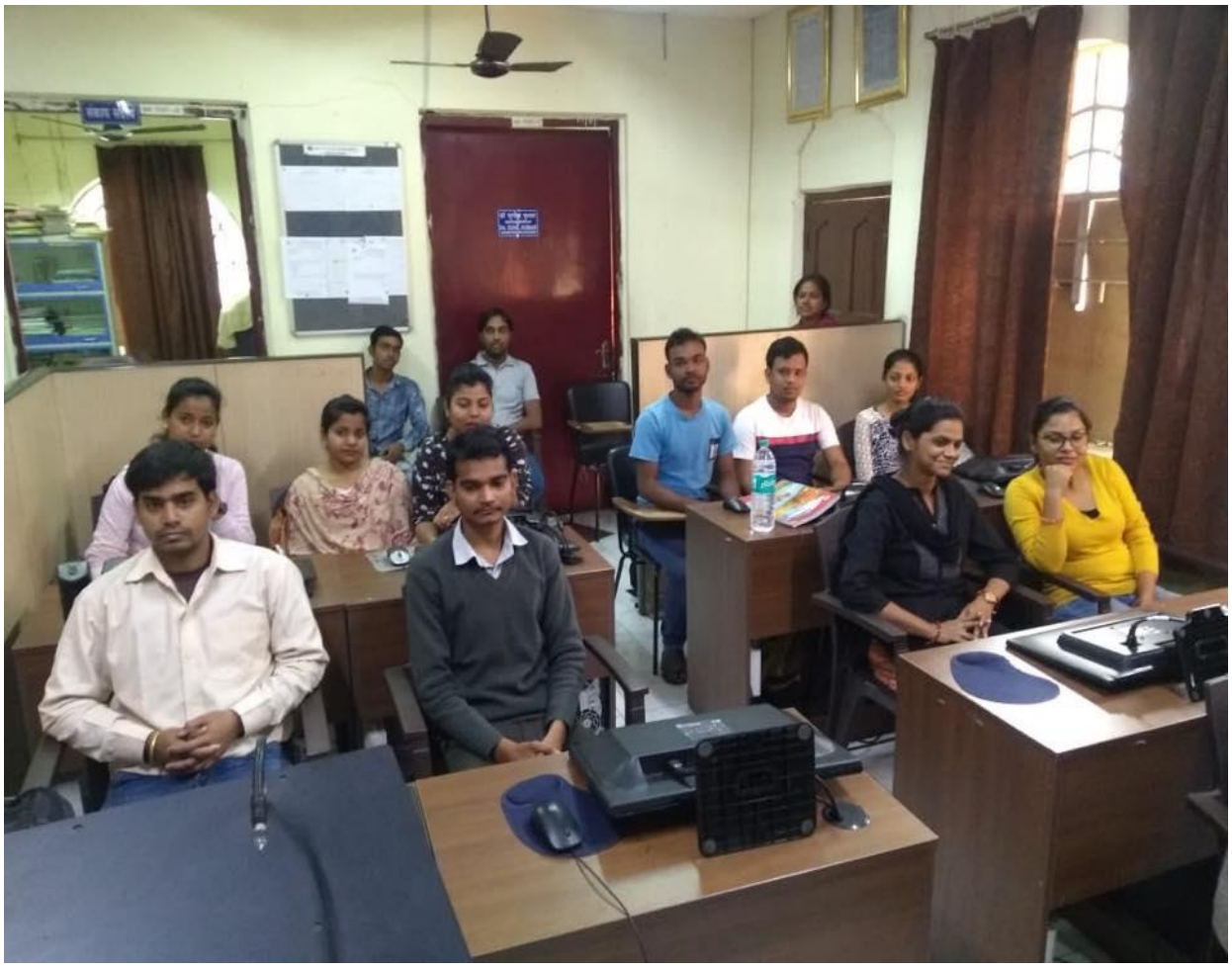

ज्ञान शांति मैत्री

विश्वविद्यालय, वर्धा के क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता में एक शोक सभा का आयोजन किया गया। इसमें दिवंगत लेखिका के जीवन और रचना कर्म के विविध पहलुओं पर भी बात की गई। आरंभ में केंद्र के प्रभारी और सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. सुनील कुमार ने कहा कि कृष्णा सोबती को पढ़ना स्त्री-पुरुष दोनों के लिए समान रूप से जरूरी है। उनका विपुल और सोद्देश्य लेखन आज की पीढ़ी के लिए खासा प्रेरणादायक है। प. बंगाल के पुलिस महानिदेशक (होमगार्ड) और कवि-लेखक मृत्युंजय कुमार सिंह ने कहा कि कृष्णा जी जीवन और लेखन दोनों में दुस्साहसी थीं और अपने साहित्य के माध्यम से वे हजारों साल तक जीवित रहेंगी। उन्होंने केवल परंपरा भंजन ही नहीं किया बल्कि नया रास्ता भी दिखाया। केंद्र की अतिथि अध्यापक पूजा शुक्ला ने कृष्णा सोबती की रचनाओं के विविध पक्षों पर अपनी बात रखते हुए कहा कि कृष्णा सोबती अपनी भाषा के साथ कभी समझौता नहीं करती थीं। वे चरित्र और पात्रों का चयन बहुत सोच-विचार के साथ करती नज़र आती हैं।

केंद्र की विजिटिंग फ़ैकल्टी प्रो. चंद्रकला पाण्डेय ने कहा कि कृष्णा सोबती जब किसी महिला को बुलाती थीं तो 'ऐ लड़की' कहकर पुकारती थीं। वे महज किताबी बात नहीं लिखती थीं बल्कि समाज की विसंगतियों की गहराई से पड़ताल करते हुए लिखती थीं। कृष्णा जी ने स्त्रीवाद के प्रति शुरू से अपना असहमति का ही रुख भले ही रखा लेकिन उनकी रचनाएँ स्त्रीवाद को

मजबूत ही बनाती हैं। इस आयोजन में केंद्र के विद्यार्थियों-शोधार्थियों की भी सहभागिता रही। अंत में दिवंगत के प्रति दो मिनट का मौन रखा गया।